महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

धर्मनिरपेक्षता का कोई विकल्प नहीं –विभूति नारायण राय

वर्धा, 6 नवंबर 2012: हिंदी के सुपरिचित उपन्यासकार तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा है कि धर्मनिरपेक्षता का कोई विकल्प नहीं है। राय मंगलवार को विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में बुद्धिजीवियों के पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। इस संवाद में प्रो. अमरनाथ, डा. जरीना जर्री, प्रसून भौमिक, विश्वंभर नेवर, हरिराम पांडेय, मृत्युंजय कुमार सिंह, प्रियंकर पालीवाल, प्रो. जेके भारती, प्रो. सुनीता मंडल, सुभाष मंडल और मनीषा यादव ने श्री राय से प्रश्न पूछे। राय ने कहा कि बिना धर्मनिरपेक्ष हुए हम आधुनिक नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि अधिकतर मुसलमान यदि भारतीय राज्य और पुलिस के प्रति अविश्वास रखता है तो उसके वैध कारण हैं। विश्वास तभी जन्मेगा जब भारतीय राज्य अपने आचरण में सुधार करेगा।

उन्होंने कहा कि यह धारणा गलत है कि अधिकतर मुसलमान स्वभावतः क्रूर होते हैं। आजादी के बाद जितने दंगे हुए, उसमें मुसलमान ही ज्यादा मरे। उन्होंने अपनी नई किताब हाशिमपुरा, अपने शोध प्रबंध दंगे और भारतीय पुलिस और उपन्यास शहर में कर्फ्यू से संबंधित सवालों के

जवाब भी खुलकर दिए। राय ने कहा कि सांप्रदायिकता कोई हल नहीं। संवाद कार्यक्रम की शुरुआत कवि-गायक मृत्युंजय कुमार सिंह के काव्य संगीत से हुई। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

संवाद सत्र के बाद दूसरे सत्र में सुनील गंगोपाध्याय का स्मरण किया गया। इस सत्र को सुशील कांति, प्रियंकर पालीवाल, प्रसून भौमिक और अमरनाथ ने संबोधित किया। अध्यक्षता कुलपति विभूति नारायण राय ने की। सुशील कांति ने सुनील दा की कविताओं की आवृत्ति की। उन्होंने काव्य संगीत भी पेश किया।

बी. एस. मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी